ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

# वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 20 कुल पृष्ठ-8 13 से 19 अक्टूबर, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853123 सम्वत् 2079 का. कृ.-04


## आर्य समाज कोसीकला, जिला–मथुरा (उत्तर प्रदेश) का वार्षिकोत्सव 6 से 9 अक्टूबर, 2022 की तिथियों में धूमधाम के साथ हुआ सम्पन्न

# स्वतंत्रता आन्दोलन में महर्षि दयानन्द जी का अविस्मरणीय योगदान रहा

– स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज कोसीकला, जिला–मथुरा, उत्तर प्रदेश का 84वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 6 से 9 अक्टूबर, 2022 तक महर्षि दयानन्द भवन (आर्य समाज धर्मशाला) आर्यनगर कोसीकला में धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, आचार्य स्वदेश जी, आचार्य संजय याज्ञिक 'वैदिक प्रवक्ता', आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री अध्यक्ष राजार्य सभा आदि विद्वानों के अतिरिक्त युवा भजनोपदेशक श्री मोहित शास्त्री, श्री धनीराम बेधड़क, श्री ओमवीर सिंह, श्री अमीचन्द्र जी ढोलक वादक आदि विशेष रूप से सम्मिलित हुए।

6 अक्टूबर, 2022 को प्रातः 7.30 बजे से यज्ञ प्रारम्भ हुआ और 9 बजे आर्य समाज कोसीकला के यशस्वी प्रधान डॉ. अमर सिंह पौनिया के कर–कमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। तत्पश्चात् नगर में विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें श्री तरुण सेठ एवं श्रीमती सीमा रानी मुख्यअतिथि रहे। शोभा यात्रा में यज्ञ करते हुए आर्यजनों ने विशेष झांकी प्रस्तुत की। मध्यान्ह 1.30 बजे से 5 बजे तक भजन एवं प्रवचनों का कार्यक्रम रहा।

दिनांक 7 से 9 अक्टूबर, 2022 तक प्रतिदिन 7.30 बजे से यज्ञ और 9 से 11 बजे तक भजन एवं उपदेश का कार्यक्रम चलता था। इसी प्रकार मध्यान्ह 1.30 से 5.30 तक तथा रात्रि 7.30 से 11 बजे तक कार्यक्रम चलता था।

7 अक्टूबर, 2022 को यज्ञ के उपरान्त आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट व आर्य युवक परिषद् हरियाणा के पूर्व प्रधान श्री रामनिवास जी कोसीकला पहुंचे।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी का सारगर्भित प्रवचन हुआ। स्वामी जी ने यज्ञ के विषय में विस्तार से अपने विचार प्रस्तुत किये और कहा कि यज्ञ पूरे संसार की धूरी है (अयं यज्ञः भुवनस्य नाभिः)। स्वामी जी ने कहा कि जिस प्रकार परमपिता परमेश्वर सृष्टि के संचालन के लिए सूर्य की अग्नि से समस्त क्रियाएँ यज्ञ रूप में कर रहे हैं, उसी प्रकार मनुष्य को भौतिक अग्नि के द्वारा यज्ञ करके अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए। यज्ञ से पर्यावरण शुद्ध होता है, यज्ञ से रोगों का निदान होता है और यज्ञ से आत्मा की उन्नति भी होती है। यज्ञ करने वाला व्यक्ति प्राणिमात्र के कल्याण करने का फल प्राप्त करता है। अतः हम सभी को यज्ञ करना चाहिए। वैदिक ऋषियों ने प्रत्येक मनुष्य के लिए यज्ञ का विधान किया है, क्योंकि मनुष्य अपने शरीर से दुर्गन्धयुक्त श्वांस एवं आंख, नाक, कान आदि से मैल छोड़ता है, उसी प्रकार शरीर से निकलने वाला पसीना एवं मल–मूत्र आदि वायुमण्डल को प्रदूषित करते हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि वह यज्ञ के द्वारा इस प्रदूषण को समाप्त का पुरुषार्थ करे। यज्ञ में जहाँ शुद्ध घी का प्रयोग होता है वहाँ औषधियुक्त सामग्री एवं आम, पीपल, पलास, गूलर, वट वृक्ष आदि की समिधाओं का प्रयोग होता है। इन सभी हव्य पदार्थों को अग्नि सूक्ष्म बना देती है और वायुमण्डल में फैला देती है जिससे हानिकारक कीटाणु एवं विषाणु समाप्त हो जाते हैं। वायुमण्डल से मनुष्य श्वांस लेता है उस श्वांस के द्वारा यज्ञ से सूक्ष्म हुए सभी औषधि एवं घृत आदि के तत्व मनुष्य के शरीर में जाते हैं और शरीर के अन्दर भी कीटाणुओं को खत्म करते हैं। इस प्रकार यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। स्वामी जी ने सभी श्रोताओं से आग्रह किया कि वे दैनिक यज्ञ यदि नहीं कर सकते तो साप्ताहिक यज्ञ अवश्य करें। अन्य आवश्यक कार्यों के साथ–साथ यज्ञ को भी एक आवश्यक कार्य समझकर यदि हम सबलोग यज्ञ करने लगेंगे तो इसके बहुत अच्छे परिणाम निकलेंगे। आर्य समाज को यह श्रेय जाता है कि वैदिक यज्ञ आर्य समाज के द्वारा ही किये जाते हैं।

आचार्य स्वदेश जी ने वैदिक सिद्धान्तों को आचरण में लाने की प्रेरणा दी और अपने जीवन को यज्ञमय बनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज में युवकों को अधिक से अधिक लाना चाहिए, ताकि आर्य समाज का भविष्य सुरक्षित हो सके।

आचार्य संजय याज्ञिक ने अपने संक्षिप्त व्याख्यान में कहा कि यज्ञ के द्वारा हम परिवार एवं राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर ले जा सकते हैं।

मध्यान्ह भोजन के उपरान्त कार्यक्रम पुनः प्रारम्भ हुआ। श्री मोहित शास्त्री एवं श्री ओमवीर आर्य के भजनों के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी व्याख्यान में स्वतंत्रता आन्दोलन में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारत की स्वतंत्रता के आन्दोलन में महर्षि दयानन्द जी के गुरु स्वामी विरजानन्द जी की प्रेरणा से 1857 की क्रांति के बाद आन्दोलन जारी रहा। स्वामी विरजानन्द जी ने रियासतों के राजे–रजवाड़ों और खापों के प्रधानों को स्थान–स्थान पर एकत्रित करके स्वतंत्रता आन्दोलन की प्रेरणा दी थी। उन्होंने ही महर्षि दयानन्द जी को प्रेरित किया था कि वे इस कार्य को प्राथमिकता से करें। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की प्रेरणा से उनके परम शिष्य श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा पढ़ने के लिए लन्दन गये और वहां पर उन्होंने इण्डिया हाउस की स्थापना की जिसमें भारत के अनेक क्रांतिकारी यज्ञ के कार्यक्रम में आते थे। इसी प्रकार भाई परमानन्द, लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई बाल मुकुन्द, शहीदे आजम सरदार भगत सिंह उनके पिता सरदार किशन सिंह, उनके दादा सरदार अर्जुन सिंह, अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खांप, ठाकुर रोशन सिंह, राजेन्द्र सिंह लाहिड़ी, यशपाल, गणेशंकर विद्यार्थी आदि अनेक क्रांतिकारी महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणा से स्वतंत्रता आन्दोलन में सर्वात्मना समर्पित होकर जुटे और अपना बलिदान दिया। महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज के इस ऐतिहासिक योगदान को कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. पट्टाभि सीतारमईया ने भी स्वीकारते हुए कहा है कि स्वतंत्रता आन्दोलन में सबसे बड़ा योगदान आर्य समाज के लोगों का रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द जी के साहस और वीरता का दूसरा उदाहरण नहीं मिलता। जब उन्होंने जलियावाला बाग के जघन्य काण्ड के पश्चात् अमृतसर में कांग्रेस के अधिवेशन के लिए स्वागताध्यक्ष का पद स्वीकार करके पूरे पंजाब में फैले हुए अंग्रेजों के खौफ को चुनौती दी थी। यहाँ पर यह भी उल्लेख करना आवश्यक है कि आर्य समाज के हैदराबाद आन्दोलन में ही निजाम हैदराबाद के दांत खट्टे किये थे और उसे काले कानून वापस लेने के लिए मजबूर किया था। यह सर्वविदित ही है कि सन् 1947 में भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् निजाम हैदराबाद ने भारत गणराज्य में अपना विलय करने से मना कर दिया था। उस समय फिर आर्य समाज के क्रांति वीरों ने निजाम के खिलाफ न केवल जबरदस्त आन्दोलन किया बल्कि कुछ सिरफिरे आर्य युवकों ने उसकी गाड़ी पर बम्ब तक फेंक दिया था और उसे यह सोचने के लिए मजबूर कर दिया था कि यदि उसने भारत में विलय नहीं किया तो वह सुरक्षित नहीं रह सकेगा।

सन् 1949 में जब सरदार बल्लब भाई पटेल हैदराबाद गये और एक विशाल सभा को सम्बोधित किया तो उन्होंने यह बात सार्वजनिक रूप से कही कि निजाम का विलय आर्य समाज के आन्दोलन के कारण हो पाया है। यहाँ पर विशेष रूप से यह बात भी उल्लेखनीय है कि गत् 26 फरवरी, 2022 को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव के अवसर पर हरियाणा के वर्तमान राज्यपाल महामहिम श्री बंडारू दत्तात्रेय जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा था कि यदि आर्य समाज न होता तो हैदराबाद में तिरंगा झण्डा नहीं चढ़ सकता था। हैदराबाद आन्दोलन के लगभग 4000 सत्याग्रहियों को प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की सरकार ने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी का दर्जा देते हुए ताम्र पत्र भेंट किये थे और उनकी आजीवन पेंशन प्रारम्भ की थी। इन तथ्यों से स्पष्ट है कि स्वतंत्रता आन्दोलन में महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की भूमिका अविस्मरणीय रही है। किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि अमृत महोत्सव के अवसर पर आयोजित हजारों कार्यक्रमों में किसी भी वक्ता ने महर्षि दयानन्द, आर्य समाज या उन आर्य बलिदानियों को याद नहीं किया। यह एक कृतघ्नता एवं अक्षम्य अपराध है।

9 अक्टूबर, 2022 को 21 कुण्डीय सुख–समृति महायज्ञ किया गया। इस पूरे कार्यक्रम में समाज के प्रधान श्री अमर सिंह पूनिया के अतिरिक्त श्री सत्यप्रकाश आर्य, श्री विजय कुमार आर्य, श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य व श्री सुरेश आर्य का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में श्री भगवान देव वानप्रस्थी, श्री नन्दकिशोर शास्त्री, श्री चतर सिंह आदि भी सम्मिलित रहे।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

# वैदिक संस्कृति का प्रचार तीव्रतर हो

– डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह चौहान

महर्षि दयानन्द सरस्वती के कार्यों को तीव्रगति से चलाते रहना चाहिए। आज परिवार समाज, राज्य व्यवस्था में जो अनिश्चितता का वातावरण बना हुआ है उसका कारण वेद विरूद्ध मान्यताओं को महत्त्व देना है अतः यदि चहुँमुखी विकास, सुख व शान्ति चाहिए तो आज वेदज्ञान की ओर बढ़ना होगा। वेद में वह सभी ज्ञान है जो प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यक है। सत्य ज्ञान का स्रोत वेद है यह ज्ञान ईश्वरीय है इस मार्ग पर चलकर कहीं कोई कष्ट नहीं आ सकता। प्राचीन वैदिक काल में वैदिक मार्ग पर चलकर ही कहीं कोई ईर्ष्या वैमनस्य न था राजा प्रजा सबको वैभव के लिए वेदों की ओर चलना होगा। यह तभी सम्भव है जब चहुँ ओर वेद प्रचार हो।

आज आर्य समाजों में वर्ष में दो तीन बड़े आयोजन करके खानापूर्ति मात्र कर ली जाती है। ऋषिबोधोत्सव, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस या पं. लेखराम बलिदान दिवस पर ही आयोजन हो पाते हैं क्योंकि ऐसे विशेष अवसरों पर भी नहीं करेंगे तो कब करेंगे यह दिवस तो महापुरुषों को याद करने उनके बताए मार्ग पर चलने-चलाने को आवश्यक है ही परन्तु उन्होंने जो मार्ग व कार्यक्रम तथा समाज व राष्ट्र की उन्नति हेतु सुधार आदि किए थे उन पर भी दृष्टि करना व कार्यों को आगे बढ़ाना आवश्यक है केवल पद कुर्सी, अपने नाम के प्रचार हेतु ही कार्य करना आर्य समाज का उद्देश्य नहीं है उनको सक्रिय रूप से तीव्रतर गति देनी आवश्यक है।

1. शुद्धि सम्बन्धी कार्य : स्वामी श्रद्धानन्द ने इस कार्य को तीव्र गति प्रदान की थी उस समय मुसलमान जनता उनके आदर्श को मानती थी और स्वामी श्रद्धानन्द से सभी प्रभावित थे हिन्दू शुद्धि कार्यक्रम चलाए और गाँव के गाँव शुद्ध करा दिए। पं. लेखराम, कुंवर सुखलाल तथा अनेक महापुरुषों ने इस कार्य को आगे बढ़ाया। महर्षि के मार्ग पर चलकर इन्होंने कोई कमी न छोड़ी यदि शुद्धि कार्य चलता रहता तो भारत पाकिस्तान का बंटवारा न होता क्योंकि उस समय मुस्लिम व ईसाई समुदाय का अधिकांशतः झुकाव पुनः अपने प्राचीन वैदिक आर्य मत में वापिस आने का बन गया था। आज इस कार्य को विचारपूर्वक सुदृढ़ योजना द्वारा सम्यक गति देनी चाहिए।

2. जाति भेद की खाई : एकबार महर्षि दयानन्द किसी नाई के यहाँ का भोजन कर रहे थे किसी ने कहा स्वामी जी यह तो नाई की रोटी है महर्षि जी ने कहा यह गेंहूँ की और मेहनत की कमाई की रोटी है, चोरी व किसी को दुखी कर बेईमानी से कमाए अन्न को ग्रहण नहीं करना चाहिए। आज ऐसे संदेश व भावनाओं को अलग कर जाति भेद की खाई को गहरा किया जा रहा है। चुनावों में जातिगत आंकड़े लगाए जाते हैं। जातिगत खाई को बढ़ाने में आरक्षण व्यवस्था भी कम नहीं क्योंकि जो आरक्षण प्राप्त धनाढ्य लोग उच्च पदों पर आश्रित हैं भ्रष्टाचार रिश्वत के चलते उन्हें ही आरक्षण मिलता है आर्थिक रूप से अवनत व्यक्ति आरक्षण से आज भी दूर है आरक्षण व्यवस्था जातिगत न होकर आर्थिक होनी चाहिए। गाँवों में भी आज ग्राम पंचायत चुनावों में जातिगत खाई बनती जा रही है आर्य समाज को चाहिए कि समाज में जागृति लाकर ऐसी स्थिति उत्पन्न करें कि राजनीतिज्ञ लोग जातिगत आधार पर टिकट न देवें और देवें तो ऐसों को जनता अलग कर केवल श्रेष्ठ विद्वान् व प्रजा हेतु समर्पित व्यक्ति को ही अपना मत प्रदान करें क्योंकि दुष्ट व्यभिचारी, भ्रष्टाचारी और आचरण से पतित व्यक्ति जाति व वर्ग तो दूर अपने भाई का भी भला नहीं कर सकता, ऐसे नेता केवल धनार्जन हेतु कुर्सी हथियाने का चुनाव लड़ते हैं और श्रेष्ठ जन सभी का अपना होता है यहाँ तक कि शत्रु का भी भला करने वाला होता है।

3. समाज में गिरता आचरण : आज छोटे बड़े का सम्मान कम होता जा रहा है वस्त्र परिधान में बदलाव हो रहा है अर्द्धनग्नता के दर्शन हो रहे हैं। सिनेमा, टी. वी. में अश्लील फूहड़ गानों, दृश्य व संवाद का घर-घर में प्रचार हो रहा है, कामुकता व्यभिचार बढ़ रहे हैं नित्य प्रति चारों ओर हत्याकाण्ड मान मर्यादाओं का हनन, यौनाचार वृद्धि पर है। माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-भतीजे, आस-पड़ोस, सगे-सम्बन्धी आपस में प्राचीन वैदिक काल जैसे मधुर सम्बन्धों से दूर हो रहे हैं सम्बन्धों में दरार आ रही है। पहले संयुक्त परिवार होते थे आज एकाकी परिवार बन कर रह गए हैं और वह भी पति-पत्नी में भी अधिकांशतः सम्बन्ध विच्छेद होकर सन्तान का जीवन कष्टमय होता जा रहा है।

4. वैदिक संस्कार : महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कारों के महत्त्व को बताया था। कोई भी व्यक्ति व परिवार वेदानुसार संस्कारों से अछूता नहीं रहना चाहिए था परन्तु आज विवाह व जन्म के अवसर पर पाश्चात्यता के दर्शन होते हैं। संस्कारों से विरूद्ध होकर कुमार्ग पर चलने लगे और जीवन कष्टमय बन गया है। महर्षि के बताए प्रथम छह सात संस्कार जीवन को आदर्श बनाने हेतु अत्यावश्यक होते हैं। आज सन्तानों का जन्म भी पाश्चात्य संस्कृति के वातावरण में ही होता है इस कारण मानव अपने सगे सम्बन्धियों माता-पिता, आचार्य समाज व राष्ट्र से दूर होता जा रहा है। क्योंकि वैदिक संस्कार मनुष्य को श्रेष्ठ बनाकर मानवता के गुणों का संचार करते हैं इससे अलग होकर ही आज मानव-दानव का रूप रख समाज को कष्ट में डाल रहा है। हमें जनता को वैदिक संस्कारों के विषय में बताना चाहिए और जो धर्म के ठेकेदारों की दुकानें हैं उनको बन्द करा आर्य पुरोहित द्वारा ही संस्कार कराने चाहिए।

5. भक्ष्य अभक्ष्य : सर्दियों में अब नगर में चौराहों व गलियों में अण्डों की बड़ी-बड़ी दुकानों पर खाने वालों की भीड़ दिखाई देती है। माँसाहार व मद्यपान वालों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। बस, रेल व सार्वजनिक स्थानों व यहाँ तक कि कार्यालयों में भी लोग तम्बाकू गुटका, पान-मसाला व धूम्रपान करते मिलेंगे और जहाँ बैठेंगे थूक कर गंदगी फैलाते दिखाई देंगे। तामसिक भोजन करने की प्रवृत्ति लोगों में बढ़ती जा रही है। इसका निराकरण भी आवश्यक है।

6. शिक्षा व्यवस्था : उपनयन संस्कार के पश्चात् बालक की शिक्षा आरम्भ हो जाती थी आज वह व्यवस्था शून्य प्राय हो रही है और शिक्षा मैकाले वाली प्राप्त हो रही है विद्यालय पाश्चात्य संस्कृति के पोषक बन रहे हैं। कान्वेन्ट स्कूलों की भरमार हो रही है। अंग्रेजी भाषा को महत्त्व दिया जा रहा है जहाँ विद्यालयों में युवा बालक बालिकाएँ पाश्चात्य वातावरण में पल रहे हों और अर्द्धनग्नता असभ्यता तथा शालीनता के विरूद्ध कार्य करते हों। वैलेन्टाइन डे आदि पर बल देते हैं। ऐसी वेद विरूद्ध शिक्षा से मानव व राष्ट्र तथा समाज का निर्माण नहीं हो सकता। भारतीय संस्कृति महान व गौरवशाली है जहाँ भीम, अर्जुन, कृष्ण व राम जैसे महान विभूतियाँ जन्मीं। कैकेयी, सुमित्रा, मैत्रेयी, सीता, शकुन्तला जैसी मातृ शक्तियों ने अपने विशेष आदर्शों से भारत भूमि को सींचा ऐसे शिक्षा संस्थानों, गुरुकुलों व गुरुकुलीय व्यवस्था की आज आवश्यकता है। आर्य समाज का दायित्व अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। प्रत्येक गाँव व नगरों में भी सुरम्य प्राकृतिक वातावरण में गुरुकुलों का निर्माण तेजी से होना चाहिए जहाँ नाचने गाने वाले पान, तम्बाकू, मद्यपानी छात्रों के स्थान पर आदर्श छात्र व छात्राओं का निर्माण हो सके।

7. आर्थिक स्थिति : भारत की आर्थिक स्थिति अब और भी अधिक जर्जरावस्था में हो चुकी है क्योंकि जो धनाढ्य है वह और अधिक धनाढ्य होता जा रहा है और जो आर्थिक गरीब है वह और गरीब होता जा रहा है फलस्वरूप अज्ञान बढ़ कर भौतिकवाद की चमक दमक में पड़कर चरित्र बिकने लगा है देह व्यापार में वृद्धि, हत्या व अपराधों की संख्या में वृद्धि का कारण आज का बढ़ता भौतिकवाद ही है।

8. राज्य व्यवस्था : ऋषि दयानन्द जी का विचार था कि यदि राजा व प्रजा वेद ज्ञान युक्त हों, राजा, मंत्री, सेनापति, ब्राह्मण, क्षत्रियादि वर्णस्थ जन अपने धर्म को भली प्रकार जानने व आचरण करने वाले हों तो चारों ओर सुख शान्ति स्थापित हो सकेगी इसलिए वह एक सामान्य व्यक्ति से लेकर राजा महाराजाओं तक से मिले और उन्हें समझाया इस मार्ग में उन्हें अनेक कष्ट उठाने पड़े, विष भी पीना पड़ा परन्तु वह पीछे नहीं हटे सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि जैसा राजा वैसी प्रजा अर्थात् एक राजा विद्वान्, धर्मावलम्बी, श्रेष्ठ आचरण, सत्य व न्याययुक्त होगा तो प्रजा भी वैसी ही होगी। आज उच्च पदस्थ अनेक लोग भ्रष्टाचारी व व्यभिचार आदि में लिप्त पाये जाते हैं ऐसे में राष्ट्र उन्नति कैसे करेगा। आर्यजनों को राष्ट्र निर्माण हेतु राजाओं अर्थात् मंत्री, अधिकारी आदि को श्रेष्ठ मार्ग का निर्देशन देना होगा यह भी महर्षि का कार्य था जो आज के संदर्भ में आवश्यक है।

9. दहेज और अन्धविश्वास : महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने समाज की कुरीतियों, बाल-विवाह, विधवा-विवाह, मूर्ति पूजा विभिन्न मत मतान्तरों पर प्रहार किया और मूर्ति पूजा का तो वह सर्वाधिक विरोध करते थे। आज मूर्ति पूजा बढ़ रही है। प्रतिवर्ष कांवड़ियों की भीड़ बढ़ती जा रही है यहाँ तक की मार्गों का आगमन भी अवरूद्ध हो जाता है और हम अपनी समस्याओं में उलझे हुए हैं। स्त्री की स्थिति दहेज प्रथा के विषय में और भी गंभीर हो रही है विवाह को एकदम व्यापार बनाकर रख दिया है वर पक्ष, वधू पक्ष पर हावी होकर उसका मान-मर्दन कर खुल्लम खुल्ला लूट करता है। इसमें अधिकारी नेता और धनाढ्य लोग सबसे आगे हैं और इस दहेज विवाह से पत्नी व पति को दाम्पत्य जीवन में स्वाभाविक प्रसन्नता नहीं रहती है जो वैदिक शुद्ध रीति के अनुसार होती है।

महर्षि दयानन्द के तो इतने उपकार हैं जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता सबसे अमूल्य उपकार वेदों के प्रति जागृति, वेद प्रचार व वेद मार्ग का रास्ता बनाया है क्योंकि वेद मार्ग पर चल कर हम सब कुछ श्रेष्ठ मय बना सकते हैं। बस आवश्यकता है कि हम महर्षि की भावनाओं को समझें, यदि सच्चे आर्य समाजी हैं तो उनके मार्ग पर चलकर, उनके समस्त कार्यों को स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम आदि की भांति आगे बढ़ावें और यदि केवल कुर्सी तथा पद हेतु ही आर्य समाज में आते हैं तो यह सबसे बड़ा पापकर्म होगा।

# वीर भोग्या वसुन्धरा

– डॉ. सोमदेव शास्त्री

बलवान व्यक्ति सांसारिक भोगों को भोगता है, दुनिया में ताकत की पूजा होती है। कमजोर व्यक्ति हर जगह पीटता है, मार खाता है। आज हजारों आर्य समाजी हैं, जिला सभाएं, प्रांतीय प्रतिनिधि सभाएं, सार्वदेशिक सभा, हजारों की संख्या में डीएवी स्कूल कॉलेज, गुरुकुल, उपदेशक विद्यालय, पत्र–पत्रिकाएं, संन्यासी, वानप्रस्थी, विद्वान, भजनोपदेशक, आर्य पुरोहित हैं। इतना विशाल आर्य परिवार देव दयानन्द के अनुयायियों का है किंतुस्वाधीनता के प्रथम उद्घोषक महर्षि दयानन्द का नाम स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव पर लेना भी तथाकथित राजनीतिक नेताओं ने आवश्यक नहीं समझा जबकि महर्षि दयानन्द और उनके अनुयाई श्यामजी कृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द, लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, सरदार भगतसिंह, ब्रह्मचारी रामप्रसाद बिस्मिल आदि अनेकानेक देश भक्तों ने देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

आज कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी, समाजवादी पार्टी, तृणमूल कांग्रेस, लोकदल आदि सभी राजनीतिक पार्टियों ने आर्य समाज द्वारा प्रारंभ किए गए कार्य अछूतोद्धार, स्त्री शिक्षा, नारी उत्थान, राष्ट्रभक्ति आदि स्वीकार किए। कांग्रेस की स्थापना से 10 वर्ष पहले ही आर्य समाज की स्थापना हो चुकी थी। उपरोक्त सभी कार्यों के लिए आर्य समाज ने बहुत बड़ा बलिदान दिया है। जिन कार्यों को करने का श्रेय तथाकथित राजनेता स्वयं लेने का दुस्साहस कर रहे हैं तथा दयानन्द और आर्य समाज का उल्लेख नहीं कर रहे हैं।

भारत सरकार और उसके प्रधानमंत्री द्वारा ऋषि दयानन्द का नाम न लेना यह कृतघ्नता का पाप तो उन्होंने किया है किंतु आर्य समाज भी इसमें दोषी है। इतना बड़ा अपराध होने पर भी किसी ने भी विरोध में आवाज नहीं उठाई। अब तक तो हजारों विरोध पत्र प्रधानमंत्री कार्यालय, राज्यों के मुख्यमंत्री और जिलाधीश कार्यालयों में पहुंच जाने चाहिए थे। इतना बड़ा संगठन और सब कुंभकरण की नींद में सोए हैं। किसी को कोई कष्ट नहीं। सब अपने–अपने कामों में लगे हैं। दयानन्द का कार्य कौन करेगा?

आर्य समाज की निष्क्रियता को देखकर ही प्रधानमंत्री ने नाम नहीं लिया। अब तक तो आंदोलन, विरोध में जन जागरण, पदयात्रा, जगह–जगह सम्मेलन करके सरकार पर दबाव बनाया जा सकता था, परंतु किसी भी पदाधिकारी ने इस ओर ध्यान नहीं दिया तो प्रधानमंत्री को क्या चिंता। इसलिए कहा जाता है कमजोर व्यक्ति हो, समाज हो, हर जगह पिटता है या मार खाता है। जब तक आर्य समाज के संगठन में मजबूती थी तो एशिया की सबसे बड़ी धन संपन्न रियासत हैदराबाद ने 1939 में आर्य समाज के आगे घुटने टेक दिए थे। आर्य समाज की सारी 14 मांगें मान ली थी। उस समय के राजनीतिक दल तथा राजनेता तथा सरकार आर्य समाज की ताकत को समझते थे, और प्रशंसा भी करते थे। इसलिए कहा गया कि 'वीर भोग्या वसुंधरा', अर्थात् बलवान पृथ्वी के भोगों को भोगते हैं तभी तो किसी ने कहा है कि दुर्बल का कोई धनी–धोरी नहीं होता अतः अंगड़ाई लो हूंकार भरो, आर्य समाज को तेजस्वी संगठन बनाकर घोषणा करो कि सावधान! दयानन्द के सैनिक जाग रहे हैं।

**टिप्पणी– लेखक डॉ. सोमदेव जी शास्त्री के संज्ञान में लाना हम यह उचित समझते हैं कि इस विषय पर 'वैदिक सार्वदेशिक' पत्रिका के पिछले कई अंकों में स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी आदित्यवेश जी ने मुखर शब्दों में इस विषय पर अपनी आवाज उठाई और पूरे आर्य जगत का आह्वान किया कि वे स्वयं महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान को लोगों के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए कमर कसें। इतना ही नहीं सोशल मीडिया और आर्य समाज के विभिन्न कार्यक्रमों में भी स्वामी जी इस विषय पर खुलकर अपनी बात रख रहे हैं।**

– सम्पादक


।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

मात्र 3100/- में

एक वेद सैट मात्र 3100/– रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर

लागत मूल्य 4100/– रु. में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित करने हेतु आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 • दूरभाष : 011–23274771

# आर्य समाज चिन्दौड़ी, जिला–मेरठ (उत्तर प्रदेश) के सामवेद पारायण यज्ञ एवं वार्षिकोत्सव में स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्‌बोधन

## असली रावण को पहचानने की आवश्यकता है – स्वामी आदित्यवेश

## पाखण्ड व अन्धविश्वास के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलायें – स्वामी सत्यवेश

आर्य समाज चिन्दौड़ी, जिला–मेरठ (उत्तर प्रदेश) में 3 से 5 अक्टूबर, 2022 को सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन स्वामी सत्यवेश जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम का संयोजन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के व्यायामाचार्य ब्र. संहसरपाल आर्य ने किया। वेद पाठ का दायित्व श्री अंकित शास्त्री एवं श्री हृदयांश आर्य ने संभाला। इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम में 4 अक्टूबर, 2022 को यशस्वी आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी व युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी भी सम्मिलित हुए।

अपने ओजस्वी भाषण में स्वामी आदित्यवेश जी ने लोगों का आह्‌वान किया कि वे नकली रावण जलाने के बदले असली रावण को पहचानें। आज समाज में ब्रष्टाचार, जातिवाद, नशाखोरी, अन्धविश्वास व पाखण्ड, शोषण व महिला उत्पीड़न जैसी ज्वलन्त समस्याओं को जो लोग प्रश्रय देने का कार्य करते हैं वे सभी समाज के शत्रु हैं। इन बुराईयों के द्वारा समाज को पतन की ओर ले जाया जा रहा है। अतः रावण रूपी इन समस्याओं को जड़ से मिटाने का संकल्प लेना चाहिए। लोग प्रतिवर्ष हजारों करोड़ रुपये के नकली रावण जलाकर अपनी संतोष्टि कर लेते हैं, जबकि असली रावण जिन्दा रहता है और वह यह देखकर हंसता है कि जिस समाज में कागज के रावण बनाकर जलाने से संतुष्टि हो जाती है उस समाज में हमारा कौन क्या बिगाड़ सकता है। स्वामी जी ने कहा कि हमलोग राम को तो मानते हैं किन्तु राम की नहीं मानते। यह अन्धविश्वास के सिवाय और कुछ नहीं है। क्योंकि राम एक ऐसे आदर्श हैं जिनके जीवन से

हमें विशेष प्रेरणा मिल सकती है। किन्तु हम उस दिशा में नहीं सोचते। आज यही एक गम्भीर प्रश्न है जिसका उत्तर यही हो सकता है कि हम मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आदर्शों पर चलें उनके जीवन से शिक्षा लें और समाज को विकृत करने वाले तत्त्वों को पहचानें।

यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी उद्‌बोधन में यज्ञ के भौतिक एवं आध्यात्मिक पक्ष पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यज्ञ से जहाँ पर्यावरण शुद्ध होता है, वहीं रोगों से भी मुक्ति मिलती है। यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है और यज्ञ में डाली जाने वाली सामग्री के रूप में विभिन्न औषधियाँ रोगनाशक गुणों से भरपूर होती हैं। यज्ञ में ऐसी गैसें निकलती हैं जो कीटाणुओं एवं विषाणुओं को नष्ट करती हैं। अतः यज्ञ को वैज्ञानिक प्रक्रिया समझ कर करने से समाज की अनेक विकृतियाँ मिटाई जा सकती हैं। दूसरी ओर यज्ञ से मनुष्य की आत्मिक उन्नति होती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जब किसी ने यह पूछा कि क्या यज्ञ से वायु प्रदूषण ही समाप्त होता है या कोई और लाभ है तो स्वामी दयानन्द जी ने कहा था कि यज्ञ से मनुष्य की आत्मिक उन्नति भी होती है। स्वामी आर्यवेश जी ने इसी व्याख्या करते हुए बताया कि यज्ञ करने वाला व्यक्ति यज्ञ की प्रक्रिया और यज्ञ के भावार्थ को समझकर एक विशेष संतोष की अनुभूति करता है। यज्ञ एक परोपकार का कार्य है। इसमें प्राणिमात्र का कल्याण निहित है। अतः सभी प्राणियों के कल्याण के कार्य करने वाले को संतुष्टि होना स्वाभाविक बात है और इसी से उसकी आत्मिक उन्नति भी होती है, क्योंकि उसकी आत्मा में सब प्राणियों के प्रति सहृदयता एवं मित्रभाव उत्पन्न होता है। यज्ञ समर्पण, त्याग व परोपकार का नाम है। अतः यज्ञ से मनुष्य के जीवन में त्याग की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है और त्याग का निरन्तर अभ्यास ही मनुष्य को निष्काम अवस्था तक ले जाता है जिससे वह मुक्ति को भी प्राप्त कर सकता है। स्वामी जी ने उपस्थित जनसमूह को यज्ञ करने व सामवेद के अनुसार उपासना करने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर पूर्व विधायक जितेन्द्र सिंह, श्री यशवीर सिंह राष्ट्रीय लोकदल, श्री सहंसरपाल प्रधान जी रसूलपुर, श्री नीटू सहारण, मास्टर जगत, श्री कविन्द्र बाना जी, श्री करण सिंह, प्रधानाचार्य श्री कृष्णपाल सिंह, श्री लोकेश नेताजी, श्री बिजेन्द्र सिंह प्रधान, श्री दीपक प्रधान जी, श्री नहार प्रधान जी, श्री रूद्रेश धामा, श्री सनी सहारण, श्री मोहित सहारण, श्री अरूण सहारण, श्री ओमपाल दरोगा, श्री नेपाल शर्मा, श्री रजत सिंह एडवोकेट, श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, श्री नगेन्द्र सोलंकी, श्री तेजपाल बाना, मास्टर गजेन्द्र मलिक, श्री पुष्पेन्द्र मलिक, श्री राहुल तेवतिया, श्री समय सिंह, मास्टर तेजवीर सिंह डालमपुर, कुमार गौरव योगाचार्य प्रभात आश्रम, श्री विकुल आर्य, श्री राहुल आर्य, श्री आकाश आर्य, श्री विवेक आर्य, अर्चित आर्य सहित अनेक गणमान्य सम्मिलित हुए।

इस पूरे कार्यक्रम का संयोजन उत्साही कार्यकर्ता श्री विवेक आर्य ने अपने युवा साथियों की टीम के साथ संभाला हुआ था।

## आर्य समाज ढिंढावली, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश का 31वाँ वार्षिकोत्सव 1 से 3 अक्टूबर, 2022 तक भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

# स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी आदित्यवेश जी भी हुए कार्यक्रम में सम्मिलित

आर्य समाज ढिढावली, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश का 31वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 1 से 3 अक्टूबर, 2022 को धूमधाम के साथ मनाया गया। उत्सव में आर्य समाज के अनेक विद्वान्, संन्यासी एवं आर्य भजनोपदेशक सम्मिलित हुए। 1 अक्टूबर, 2022 को प्रातः श्री सत्यमुनि जी अलीपुर कलां के कर–कमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। कार्यक्रम प्रातः 8 से 12 बजे तक, दोपहर 2 से 6 बजे तक और रात्रि 8 से 12 बजे तक चलता था जिसमें देवयज्ञ, आध्यत्मिक प्रवचन एवं भजनों का कार्यक्रम रहा। इस अवसर पर सर्वश्री स्वामी आर्यवेश जी महाराज, स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी सत्यवेश जी महाराज, स्वामी ओमानन्द जी महाराज आदि के अतिरिक्त वानप्रस्थी श्री लक्ष्मीचन्द आर्य, आचार्य अजीत कुमार दिल्ली, डॉ. धीरज कुमार रमाला, आचार्य गुरुदत्त आर्य मुजफ्फरनगर, श्री मुनेश पाल गांधी आदि विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किये गये। सुकीर्ति आर्या के भजनों का कार्यक्रम रहा। इस कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी विशेष रूप से श्री मुनेश पाल गांधी, जी.एन. विडला शुगर मिल शाहजहांपुर के विशेष आग्रह पर सम्मिलित हुए। आर्य समाज की टीम काफी प्रभावशाली कार्य कर रही है। स्वामी जी के साथ श्री धर्मेन्द्र सिंह, श्री योगेश आर्य एडवोकेट आदि भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

इस अवसर पर विशाल यज्ञशाला का उद्‌घाटन स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों से कराया गया। इस कार्यक्रम में श्री संजीव कुमार आर्य प्रधान, श्री जितेन्द्र आर्य उपप्रधान, डॉ. रविन्द्र आर्य मंत्री और श्री यजेन्द्र कुमार उममंत्री, परविन्दर कुमार कोषाध्यक्ष, श्री सीताराम शर्मा और श्री बलवीर सिंह संरक्षक आर्य समाज ढिंढावली तथा श्री हरिकिशन सिंह चौधरी अध्यक्ष, संसार सिंह आर्य प्रबन्धक, श्री ऋषिपाल सिंह कोषाध्यक्ष, कौशल्या देवी प्रधानाचार्य, आर्य वैदिक कन्या इण्टर कॉलेज के पुरुषार्थ से अत्यन्त प्रभावशाली रहा। क्षेत्र की जनता भारी संख्या में कार्यक्रम में सम्मिलित हुई। कार्यक्रम में आर्य केन्द्रीय सभा मुजफ्फरनगर और जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुजफ्फरनगर के पदाधिकारी पूरे दल–बल के साथ सम्मिलित रहे।

## किसान नेता चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी की 87वीं जयन्ती 6 अक्टूबर, 2022 को किसान भवन, ग्राम–सिसौली, मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) में विशाल स्तर पर मनाई गई

## अनेक राजनैतिक तथा सामाजिक नेताओं ने उन्हें स्मरण किया

## कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः यज्ञ के द्वारा प्रारम्भ हुआ

# आर्य समाज के संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ को सम्पन्न कराया

किसानों के मसीहा और विश्व विख्यात किसान नेता चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत की 87वीं जयन्ती 6 अक्टूबर, 2022 को किसान भवन सिसौली में भव्यता के साथ मनाई गई। इस मौके पर आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी आदित्यवेश जी, श्री अंकित शास्त्री जी, ब्र. संहसरपाल आर्य आदि ने प्रातः 9 से 11 बजे तक यज्ञ सम्पन्न कराया और उपस्थित हजारों लोगों को किसानों के हितों के लिए संघर्ष करने का संकल्प दिलवाया।

स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित किसान कार्यकर्ताओं को नशा छोड़ने की विशेष प्रेरणा देते हुए कहा कि नशा व्यक्ति के जीवन में पतन का कारण बनता है। अतः संघर्षशील लोगों को कभी शराब आदि का नशा नहीं करना चाहिए। यज्ञ में टिकैत परिवार की ओर से चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत के सबसे छोटे सुपुत्र डॉ. सुरेन्द्र सिंह एम.एस.सी. पी.एच. डी. मुख्य यजमान रहे। उनके अतिरिक्त भारतीय किसान यूनियन के अध्यक्ष चौ. नरेश टिकैत, राष्ट्रीय प्रवक्ता चौ. राकेश टिकैत एवं सम्पूर्ण कार्यक्रम के संयोजक श्री गौरव टिकैत ने भी आहुति देकर स्व. चौधरी टिकैत जी को अपनी श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया और सैकड़ों लोगों ने रक्तदान करके जनकल्याण का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। यज्ञ के उपरान्त मुख्य मंच से कार्यक्रम संचालित हुआ जिसमें राष्ट्रीय लोकदल के अध्यक्ष जयन्त चौधरी, पूर्व सांसद हरेन्द्र सिंह मलिक, पूर्व मंत्री श्री धर्मवीर बालियान, भा.कि.यू. के राष्ट्रीय प्रचारमंत्री श्री होशियार सिंह, देशवाल खाप के चौ. शरणवीर देशवाल, विधायक प्रसन्न चौधरी, विधायक अशरफ अली, श्रीमती मनीषा अहलावत, सर्वखाप मंत्री श्री सुभाष बालियान, विधायक श्री राजपाल बालियान एडवोकेट, विधायक श्री देवेन्द्र चौधरी, आप पार्टी के राज्यसभा सांसद श्री संजय सिंह सहित अनेक नेताओं ने किसान नेता को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

जयन्ती समारोह की विशेषता यह थी कि इसमें क्षेत्र के अनेक गांव से लोग जलपान, भोजन, खीर, हलवा, फल आदि विपुल मात्रा में लोगों के बीच में वितरित कर रहे थे और अपनी श्रद्धा व्यक्त कर रहे थे।

कार्यक्रम में बागपत, गाजियाबाद, मेरठ, शामली, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, हरिद्वार एवं सहारनपुर आदि जिलों से तथा हरियाणा, दिल्ली, पंजाब आदि प्रान्तों से हजारों लोग स्व. टिकैत जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए पधारे।

इस अवसर पर मुख्यरूप से आर्य समाज के भी काफी कार्यकर्ता यज्ञ एवं कार्यक्रम में सम्मिलित हुए जिनमें श्री नरेश बालियान भोरा कलां, श्री धर्मेन्द्र आर्य एवं श्री बोबी प्रधान ग्राम भाजू, श्री अवनीश आर्य रठौड़ा, श्री धर्मेन्द्र आर्य छपरौली, श्री नीटा पहलवान ग्राम सिनौली, श्री हरेन्द्र वाजिदपुर, श्री ओमपाल आर्य, श्री जवाहर सिंह एवं श्री विजेन्द्र आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

कार्यक्रम के अन्त में चौ. नरेश टिकैत ने सभी आगन्तुक नेताओं एवं कार्यकर्ताओं का धन्यवाद देते हुए कहा कि आप सब लोगों का यह प्यार और सम्मान स्व. चौधरी साहब के संघर्ष एवं उनके द्वारा चलाये गये आन्दोलनों के प्रति एक श्रद्धांजलि रूप में प्रकट हो रहा है। मुझे पूरी आशा है कि आपका यह प्यार तथा संगठन भविष्य में भी इसी प्रकार बना रहेगा। लोग हमें जाति, बिरादरी में बांटने की कोशिश करते हैं किन्तु हम 36 बिरादरी के गरीब, किसान, मजदूर संगठित होकर अपने अधिकारों को प्राप्त कर सकते हैं। आज का यह समारोह राजनैतिक बातें करने का नहीं है, बल्कि इस मंच पर किसी भी पार्टी का कोई भी नेता या कार्यकर्ता स्व. चौधरी साहब को अपनी श्रद्धांजलि देने के लिए आ सकता है। भारतीय किसान यूनियन के द्वारा चलाये जाने वाले आन्दोलनों में जरूर इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि सत्ता में बैठे लोग जो अपने हठ की वजह से किसानों के साथ अन्याय करते हैं उनके विरुद्ध आवाज उठाना यूनियन का कर्त्तव्य भी है और उसका धर्म भी है। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य किसान, मजदूर की जिन्दगी में खुशहाली लाना है। उनके ऊपर होने वाले अन्याय के विरुद्ध लड़ाई लड़ना है और उन्हें सही न्याय दिलाने के लिए उनकी पैदावार का लाभकारी मूल्य, सस्ते बीज, खाद, बिजली व अन्य उपकरण उपलब्ध कराकर उनका सहयोग करना है।

# रक्तचाप के प्रति रहें सजग

**– डॉ. विनय सोनी**

उच्च रक्तचाप (हायपर टेंशन) आधुनिक युग में मृत्यु का एक प्रमुख कारण है, क्योंकि ज्यादातर मरीजों को अपने उच्च रक्तचाप की जानकारी ही नहीं होती है, इसकी वजह यह है कि मरीजों को प्रायः किसी भी प्रकार के लक्षण महसूस नहीं होते हैं, कुछ को उच्च रक्तचाप के बारे में अचानक ही ज्ञात होता है, जब वे अपने चिकित्सक के पास किसी अन्य बीमारी के निदान के लिए जाते हैं। उच्च रक्तचाप का इलाज नहीं करवाने से शरीर के अति संवेदनशील अंग जैसे मस्तिष्क, हृदय, आँखें, गुर्दे रक्त वाहिनियाँ इत्यादि धीरे-धीरे खराब होने लगते हैं और मरीज धीरे-धीरे मृत्यु की ओर अग्रसर होने लगता है।

रक्तचाप क्या है? : रक्त का लगातार संचार होने के लिए इसे एक निश्चित मात्रा में दबाव पर बहते रहना होता है, यह दबाव हृदय द्वारा बनाये रखा जाता है। जब शरीर में रक्त का संचार होता है, तो आपकी रक्त धमनियों की भीतरी दीवार पर दबाव पड़ता है और ये सिकुड़ने एवं फैलने लगती हैं। हर बार जब आपका हृदय संकुचित होता है, रक्त का दबाव बढ़ता है और जब यह फैलता है तो दबाव कम होता है। इस प्रकार हृदय संकुचन होने पर रक्त वाहिनियों में शुद्ध रक्त भर जाता है तब रक्त का दबाव (ब्लड प्रेशर) सबसे अधिक होता है, इसे सिस्टोलिक ब्लडप्रेशर कहते हैं। संकुचन के बाद हृदय की मांसपेशियाँ आराम की स्थिति में आ जाती है, तब फिर हृदय फैलता है और इसमें शुद्ध रक्त भर जाता है, इस समय रक्त का दबाव सबसे कम होता है, इसे डायस्टोलिक ब्लड प्रेशर कहते हैं। इसलिए ब्लड प्रेशर नापते समय आपका चिकित्सक दो बातों को नोट करता है, जैसे 140 अर्थात् अधिकतम में (सिस्टोलिक ब्लड प्रेशर) और 100 अर्थात् न्यूनतम (डायस्टोलिक ब्लड प्रेशर) इसकी इकाई मिमी. मरकरी में मापी जाती है, इस प्रकार ब्लड प्रेशर इस तरह लिखा जाता है -140/100 मिमी. मरकरी।

आपके ब्लड प्रेशर में दिन में कई बार परिवर्तन होता है, कुछ विशेष प्रकार के शारीरिक परिश्रम करने पर यह बढ़ जाता है, जैसे - ज्यादा भोजन करने, सर्दियों में या बहुत ज्यादा उत्तेजित या चिंतित होने पर या फिर भावनात्मक रूप से अशान्त होने पर, जब आप तनावरहित, शान्त लेटे हों तो यह अपने आप कम भी हो जाता है।

सामान्य रक्तचाप क्या है? : इस प्रश्न का उत्तर इतना आसान नहीं है। किसी एक मरीज के लिए जो ब्लड प्रेशर सामान्य है, वही दूसरे के लिए ज्यादा भी हो सकता है। जिन परिस्थितियों में ब्लड प्रेशर नापा जा रहा है, यह भी इसकी नाप पर सीधा प्रभाव डालती है, जैसे दिमागी अशांति, शारीरिक परिस्थितियों जैसे व्यायाम इत्यादि करने के पश्चात्, भोजन करने के पश्चात व भोजन से पहले, सोते समय, जागते समय, खड़े होकर, लेटे हुए, उम्र इत्यादि का ब्लड प्रेशर पर सीधा असर होता है।

आदर्श ब्लड प्रेशर 120/80 मिमी. को कहा जा सकता है, जबकि मनुष्य पूर्णतः आराम की परिस्थिति में हो। यह कुछ बिन्दु ऊपर या नीचे भी हो सकता है। इस प्रकार हम 140/90 मिमी. मरकरी ब्लड प्रेशर को सामान्य सीमा में मान सकते हैं। अपने ब्लड प्रेशर की तुलना दूसरे के ब्लड प्रेशर से नहीं की जानी चाहिए, क्योंकि हर व्यक्ति की परिस्थिति अलग-अलग होती है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए सिस्टोलिक ब्लड प्रेशर 140 मिमी. मरकरी व डायस्टोलिक ब्लड प्रेशर 90 मिमी. मरकरी तक को सामान्य कहा जा सकता है।

उच्च रक्तचाप क्या है? : अधिक शारीरिक श्रम, तनाव या उत्तेजना के कारण कभी-कभी होने वाला उच्च रक्तचाप चिंता या परेशानी की बात नहीं है। यदि आपका ब्लड प्रेशर लगातार सामान्य से अधिक रहे तो समझिए आप उच्च रक्तचाप के मरीज हैं। यहाँ 'लगातार' से मतलब है अलग-अलग दिन अलग-अलग समय पर नापा गया रक्तचाप। मनुष्य में सामान्य ब्लड प्रेशर 100/70 मिमी. मरकरी से 140/90 मिमी. मरकरी रहता है। बहरहाल यदि ब्लड प्रेशर लगातार 150/90 मिमी. से अधिक रहे तो, ऐसे व्यक्ति को हाई ब्लड प्रेशर या उच्च रक्तचाप अथवा हायपरटेंशन का मरीज माना जायेगा। उच्च रक्तचाप मुख्यतया दो प्रकार के होते हैं -

1. प्राईमरी या असेंश्यल उच्च रक्तचाप, 2. सेकेण्डरी उच्च रक्तचाप।

प्राईमरी उच्च रक्तचाप : जिसमें उच्च रक्तचाप का वास्तविक कारण ज्ञात नहीं हो या कारण नहीं मालूम किया जा सकता हो। ज्यादातर मरीज इसी श्रेणी में आते हैं। कई बार यह रोग विरासत में पीढ़ी-दर-पीढ़ी मिलता है। रहन-सहन, खान-पान, अधिक वजन, काम-काज, अधिक नमक खाने, मद्यपान, धूम्रपान करने से या सतत मानसिक तनाव से भी यह

रोग हो सकता है।

सेकेण्डरी उच्च रक्तचाप : जब रक्तचाप शरीर के दूसरे अंगों के विकार के कारण बढ़ता है। जैसे हृदय रोग, रक्त वाहिनियों के रोग, गुर्दे, एंडोक्राइन ग्रंथियों के रोग या गर्भवती महिलाओं में टॉक्सीमिया, मस्तिष्क रोग इत्यादि की वजह से होने वाले उच्च रक्तचाप को सेकेण्डरी उच्च रक्तचाप कहते हैं।

उच्च रक्तचाप के लक्षण : ज्यादातर उच्च रक्तचाप के मरीज को किसी भी प्रकार के लक्षण महसूस नहीं होते हैं? इसलिए लम्बे समय तक उच्च रक्तचाप का निदान भी नहीं हो पाता। इस प्रकार के मरीज अपना जीवन बीमा करवाते समय अथवा अपने चिकित्सक के पास किसी अन्य बीमारी का निदान करवाते समय ही उच्च रक्तचाप की जानकारी प्राप्त कर पाते हैं। इस प्रकार बिना इलाज के रहने से उच्च रक्तचाप शरीर में गम्भीर विकार पैदा कर देता है, जैसे हृदय व मस्तिष्क की धमनियों का रोग, दिल का बड़ा हो जाना, कनजस्टिव हार्ट फेल्योर, रक्त संचार प्रणाली रोग, लकवा, बेहोशी आना, गुर्दो का रोग, आँख की रोशनी सम्बन्धी रोग इत्यादि। इसलिए उच्च रक्तचाप को खामोश हत्यारा या साइलेंट किलर भी कहा गया है। वैसे कुछ मरीजों में सिरदर्द, दिल की धड़कन ज्यादा महसूस होना, सांस फूलना, ज्यादा उबासियाँ आना, चक्कर आना, बेहोशी, थकान, आँख से धुंधला नजर आना, नाक से खून आना, सीने में दर्द, कानों में घंटी का बजना इत्यादि लक्षण मिल सकते हैं।

उच्च रक्तचाप खतरनाक क्यों? : जब आपका ब्लड प्रेशर अधिक होता है, तो आपकी धमनियों की दीवार पर अधिक जोर से रक्त ढकेला जाता है। तन्तुओं तक रक्त पहुँचने के लिए हृदय को और अधिक मेहनत करनी पड़ती है। यदि आपकी धमनियाँ पहले ही 'एथरोस्क्लेरॉसिस' (सख्त होना) की बीमारी से ग्रस्त होगी, तो हाई ब्लड प्रेशर धमनियों को और अधिक क्षति पहुँचायेगा और आपके हृदय को रक्त पंप करने में और ज्यादा मेहनत करनी पड़ेगी।

परीक्षणों से ज्ञात हुआ कि अधिक समय तक उच्च रक्तचाप रहने से हृदय, किडनी, मस्तिष्क तथा रक्त शिराओं को भी नुकसान पहुँचता है, इससे रक्त शिराएँ मोंटी हो जाती हैं और हृदय का दौरा पड़ने का खतरा बढ़ जाता है। यदि हाई ब्लड प्रेशर का समय पर निदान करके उपचार न किया जाए तो इससे आपका जीवन भी जोखिम में पड़ सकता है। यह बीमारी इसलिए भी और सबसे अधिक खतरनाक है, क्योंकि हाई ब्लड प्रेशर वाले मरीज को कोई दर्द या तकलीफ नहीं होती और वह खुद को स्वस्थ समझता है। इस तरह ऐसे मरीज आने वाले खतरे के प्रति लापरवाह बने रहते हैं।

ध्यान देने योग्य बातें : उच्च रक्तचाप एक आम बीमारी है, जो कि ज्यादातर बिना किसी लक्षण के होती है।

चिकित्सक द्वारा स्फिग्नोमेनोमीटर से नापकर आसानी से ज्ञात किया जा सकता है।

चिकित्सक की सलाह अनुसार इसका इलाज कई वर्षों तक या फिर जीवन पर्यन्त लिया जाना चाहिए, वरना ब्लड प्रेशर फिर से बढ़ जाता है।

अगर इसका इलाज नहीं किया जाए तो यह हृदय, मस्तिष्क, गुर्दे व आँखों के लिए गंभीर रूप से घातक है।

अपने चिकित्सक की सलाह मानें। अक्सर मरीजों को देखा गया है कि कई तो बीच में ही दवा लेना बन्द कर देते हैं, क्योंकि वे समझते हैं कि वे अब स्वस्थ हो गए हैं या कुछ लोगों को ब्लड प्रेशर पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता या महत्त्व की जानकारी नहीं होती।

आपको जो भी दवा दी गई है चिकित्सक की राय के बगैर बन्द न करें। अपनी मर्जी से कोई दवा नहीं लें या उसमें बदलाव न करें।

क्या करें : अपने रक्तचाप की समय-समय पर जाँच करवाएँ।

किसी जानकार की निगरानी में ध्यान, योग इत्यादि का नियिमत रूप से पालन करें। जरूरत के अनुसार आराम व नींद लेनी चाहिए। सामान्यता प्रतिदिन सात-आठ घण्टे की नींद लेना स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। जवान मरीजों के लिए कसरत, दौड़ लगाना, तैरना व बुजुर्गों के लिए तेज चलना व हल्की कसरत करना लाभदायक है।

नमक कम खाएँ (5 ग्राम प्रतिदिन)

जिन मरीजों का वजन ज्यादा है उन्हें कम कैलोरी वाला भोजन करना चाहिए। चीनी व वसा इत्यादि का सेवन कम करना चाहिए और वजन संतुलित रखना चाहिए।

मधुमेह के रोगियों को समय-समय पर रक्त में शर्करा की जांच करवाते रहना चाहिए। चर्बी का सेवन नहीं करना चाहिए जैसे भेड़ का मांस, अण्डा, डेयरी उत्पादन आदि।

क्या नहीं करें : बन्द डिब्बों के खाद्य पदार्थों (प्रोसेस्ड फूड) का सेवन न करें। तुरन्त भोजन (फास्ट फूड) का उपयोग न करें। ऐसी दवाएँ (एन्टाएसिड) जिनमें नमक हो उसका सेवन नहीं करें। मद्यपान व धूम्रपान न करें। कॉफी कम से कम पिएँ। दो कप कॉफी भी रक्तचाप को बढ़ाने के लिए पर्याप्त है।

- 134, विनय क्लीनिक, पीतलियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

# अपराजेय योद्धा महर्षि दयानन्द

– डॉ. रघुवीर वेदालंकार

दयानन्द केवल धर्मोपदेष्टा न था, न ही केवल समाज सुधारक या वेद प्रचारक था। दयानन्द एक संग्राम का योद्धा था। वह संग्राम भी विचित्र था एक ओर पूरा आर्यावर्त, उनके दिग्गज विद्वान? तो दूसरी ओर अकेला दयानन्द।।

इतना ही नहीं, वह ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध भी लड़ा। उसने राजनैतिक मोर्चा भी सम्भाला। अपने लेखों एवं भाषणों में सर्वदा ब्रिटिश शासन की समाप्ति की बात कही। न केवल कही ही, अपितु 1857 के स्वातन्त्र्य समर में क्रियात्मक योगदान भी गुप्त रूप से दिया, ऐसा भी कहा जाता है। यह गलत भी नहीं है क्योंकि दयानन्द का गुरु तो सचमुच क्रांतिपुंज ही था। वह नाम से ही प्रज्ञाचक्षु नहीं था अपितु अपनी विमलप्रज्ञा के द्वारा 80 वर्ष का वृद्ध होने पर भी राजाओं-महाराजाओं में अंग्रेजी राज्य को उखाड़ फेंकने के बीज बो रहा था। साथ ही वह आर्य विद्या का उद्धारक तथा व्याकरण का सूर्य भी था। दयानन्द में उसके गुरु की ये तीनों ही विशेषताएँ समाविष्ट हो गई थीं।

गुरुवर विरजानन्द की भांति ही दयानन्द भी क्रांति दूत था। वह वीरत्व की साक्षात मूर्ति था। वह परम ईश्वर विश्वासी था तथा सत्य एवं ब्रह्मचर्य ने तो मानो साक्षात् दयानन्द के रूप में ही शरीर धारण कर लिया था। वह परम योगी भी था। इन गुणों के आधार पर ही वह, जीवन संग्राम में अकेला ही डटा रहा। उसके उक्त गुण ही उसकी सेना थे। इनके बल पर ही उसने संग्राम का चहुं ओर मोर्चा खोल दिया, विजय शंख फूंक दिया।

यह संसार युद्ध स्थली ही है। बड़े-बड़े युद्ध राज्यों की प्राप्ति के लिए ही किये जाते हैं। महाभारत के धर्मयुद्ध में भी योगीराज श्री कृष्ण ने अर्जुन को कहा था –

'हतो वा प्राप्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।'

अर्थात् युद्ध में मरने पर तुम्हें स्वर्ग मिलेगा तथा विजयी होने पर राज्य की प्राप्ति होगी। दयानन्द के सामने ऐसा कोई प्रलोभन न था। उसने तो इस युद्ध के लिए अपने मोक्ष सुख तक को भी छोड़ दिया था। दयानन्द का युद्ध सत्य के प्रचारार्थ था, आर्य विद्या के प्रचारार्थ था तथा पाखण्ड के गढ़ को ध्वस्त करने के लिए था इसीलिए उसने अपने लेखन सर्वस्व पुस्तक का नाम सत्य-अर्थ-प्रकाश 'सत्यार्थ प्रकाश' रखा।

युद्ध में दो सेनाएँ आमने-सामने होती हैं, किन्तु यहाँ तो एक ओर पूरा भारत, उसमें फैले विविध मत-मतान्तर, मठाधीश, दिग्गज विद्वान्, धर्म के नाम से प्रचलित विविध पाखण्ड एवं पाखण्डी थे तो दूसरी ओर दयानन्द अकेला ही था। इतना ही नहीं, अपितु धर्म के नाम पर सुदृढ़ ईसाई तथा मुस्लिम सम्प्रदाय भी उसके विरोध में थे।

अंग्रेजी सरकार दयानन्द की स्वदेश भक्ति एवं अंग्रेजी राज्य के विरोध के कारण उसे बागी विद्रोही घोषित कर ही चुकीं थी। दयानन्द ने इन सबका मुकाबला अकेले ही किया था। उसने लिखकर, बोलकर तथा क्रियात्मक रूप में भी इन सबका सामना किया।

वह सर्वप्रथम व्यक्ति था जिसने अंग्रेजी न्याय व्यवस्था पर भी प्रश्न उठाया था कि यदि कोई गोरा काले (भारतीय) को मार दे तो उसे उचित दण्ड नहीं दिया जाता। दयानन्द ने सरकार के नमक कानून का भी विरोध किया था कि गरीब जनता पर नमक टैक्स लगाना उचित नहीं। दयानन्द ने धार्मिक तथा सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया, उन्हें जड़ से उखाड़ने का यत्न किया।

इस महासमर में, दयानन्द के हाथ में एक ही शस्त्र था तथा वह था वेद। यही उसका सुदर्शन चक्र था। सामने कोई भी शत्रु टिक नहीं सकता था। इसी प्रकार वेदपाणि दयानन्द के सामने कोई भी नहीं टिक पाया। उसका यह सुदर्शन चक्र अजेय था। भारतीय जनता यहाँ तक कि धुरन्धर विद्वान भी इसे भूल चुके थे। इस पर धूल की पर्तें जम गई थीं तथा कहा जा रहा था कि वेदों को तो शंखासुर चुरा कर ले गया। दयानन्द ने तभी अपने झोले में से वेद की पोथी दिखला कर कहा कि – 'तुम्हारे आलस्य रूपी शंखासुर का वध करके मैंने ये वेद जर्मनी से मंगाया है।'

भारत की यह निधि विदेश पहुंच गई थी। जहाँ पर पाश्चात्य विद्वानों द्वारा उसकी बखिया उधेड़ी जा रही थी। इस वेद विद्या पर नाना प्रकार के आक्षेप किये जा रहे थे। यथा वेद लम्बे समय तक संग्रह किये गये गड़रियों के प्रेमालाप ही हैं। इनमें सुरापान-मांस भक्षण बहुदेववाद तथा यज्ञों में गोवध आदि का विधान है। दयानन्द के सामने भी यह सब कुछ आया किन्तु वह सामान्य मनुष्य नहीं था। वह एक ऋषि था, उसके मेधा बुद्धि थीं। यास्क कहते हैं – ऋषयो दर्शनात्। स्तोमान् ददर्श इत्यौय मन्यव:। अर्थात् तत्ववेत्ता को ऋषि कहते हैं। सामान्य व्यक्ति तो किसी भी पदार्थ या घटना को ऊपरी सतह तक ही देखता है। किन्तु ऋषि उसके वास्तविक परोक्ष स्वरूप को भी पहचान लेता है। वेद मंत्रों के वास्तविक अर्थों को भी, ऋषि बुद्धि थी, तभी तो उसने धर्म तथा ईश्वर के शुद्ध स्वरूप को जाना। उसने यह भी समझ लिया कि वेद विद्या के लोप होने से ही यह सब कुछ पाखण्ड, अनाचार, अत्याचार तथा विविध प्रकार के भ्रम जनता में फैल रहे हैं। उसने देखा कि – 'वेदों के

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

वास्तविक अर्थ तथा वेदों का सच्चा स्वरूप वह नहीं है जो कि सायणाचार्य आदि भारतीय तथा अन्य पाश्चात्य विद्वानों ने प्रस्तुत किया है।' दयानन्द ने वेदों को ऋषियों पर सृष्टि के आदि में प्रकट होने वाला ज्ञान कहा। उसने घोषणा की कि वेद सभी सत्य विद्याओं की पुस्तक है, उनमें ज्ञान-विज्ञान भरा है। तथा वे व्यक्ति सर्वविध के लौकिक एवं पारलौकिक उन्नति करने वाले हैं।

योद्धा दयानन्द के युद्ध के कई क्षेत्र थे। वह अकेला ही इन सभी मोर्चों पर लड़ा तथा विजयी रहा। धार्मिक पाखण्ड विनाश के लिए उसने हरिद्वार में पाखण्ड-खण्डिनी पताका गाड़ दी। नया नाम था तथा नया ही काम था। जो एक अकेला कौपीनधारी दयानन्द नामक साधु कर रहा था। इससे पहले किसी ने भी ऐसा नहीं सुना था।

उसने सामाजिक क्षेत्र में प्रस्तुत कुरीतियों पर भी प्रहार किया। अछूतों को भी आर्य कहा। स्त्री तथा शूद्रों के लिए शिक्षा तथा वेद के द्वार खोले। स्वामी जी की इस दूर दृष्टि पर चकित होकर तब सत्यव्रत सामश्रमी नामक वेद के विद्वान ने कहा था – 'शूद्रस्य वेदाधिकारे साक्षाद् वेदवचनमपि प्रदर्शित स्वामीदयानन्देन अर्थात् शूद्रों के वेदाधिकार में स्वामी दयानन्द ने साक्षात् वेद मंत्र 'यथेमां वाचं कल्याणी आवदानि जनेभ्या' भी उपस्थित कर दिया। इससे पूर्व शंकराचार्य से लेकर तब तक के किसी भी विद्वान का ध्यान इस मंत्र की ओर नहीं गया था। यही अवस्था स्त्री शिक्षा एवं उनके वेदाधिकार की थी। वेद तो क्या स्त्रियों को सामान्य शिक्षा का भी अधिकार नहीं था। दयानन्द ने गार्गी घोषा अपाला आदि का उदाहरण देकर कहा कि स्त्रियाँ भी पुरुषों के समान ही मन्त्रों की द्रष्टी ऋषिकाएं होती थीं। इस विषय में उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द्र लिखते हैं कि – 'स्त्रियों को दयानन्द का चिर कृतज्ञ रहना चाहिए कि उसने स्त्रियों की मुक्ति का द्वार खोल दिया।'

इन सबके साथ दयानन्द ने उस प्रबल आंधी से भी लोहा लिया जो सम्पूर्ण भारत को अपनी चपेट में ले रही थीं। वह आंधी ईसाईयत, इस्लाम तथा पश्चिमी सभ्यता की थीं। क्रांतिकारी लाजपतराय के पिता नमाज पढ़ते थे, रोजे रखते थे तथा इस्लाम स्वीकार करने मस्जिद में जा भी पहुंचे थे किन्तु बच गये। ईसाई प्रचारक हिन्दू धर्म की कमियाँ निकाल कर लोगों को धड़ाधड़ ईसाई बना रहे थे। दूसरी ओर, पश्चिमी सभ्यता भारत में सुरसा के मुख की भांति फैलती जा रही थी। दयानन्द इन आंधियों के सामने न केवल डटा ही, अपितु उसने इनकी गति को धीमा भी कर दिया।

इस विषय में पीर मुहम्मद यूनिस नामक मुस्लिम विद्वान लिखते हैं – ''ईसाईयत और पश्चिमी सभ्यता के मुद्रक हमलों में हिन्दी स्तुतियों को सावधान करने का सेहरा यदि किसी व्यक्ति के सिर बांधने का सौभाग्य प्राप्त हो तो स्वामी दयानन्द जी की ओर इशारा किया जा सकता है।''

अतीत को देखें तो पता चलता है कि – बड़े-बड़े समाज सुधारक तथा धर्म प्रचारक राज्य का आश्रय लेकर ही आगे बढ़ते हैं। यथा महात्मा बुद्ध तो स्वयं एक राजकुमार ही थे इस कारण भी उन्हें अपने अभियान में पर्याप्त सफलता मिली। इसके पश्चात् सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म स्वीकार करके अपने पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संघमित्रा को विदेशों में बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ भेजा। शंकराचार्य को सुघन्ना राजा ने बौद्ध मत के निराकरण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। जिससे बौद्ध धर्म के स्थान पर अद्वैतमत की स्थापना हो गयी। मुहम्मद तो इस्लाम के प्रचारार्थ स्वयं हाथ में तलवार लेकर लड़े थे तथा उन्होंने इसे जेहाद धर्मयुद्ध घोषित किया था। अंग्रेजी काल में भारत में ईसाईयत के प्रचार-प्रसार में अंग्रेजी राज्य का पर्याप्त सहयोग एवं योगदान रहा।

महर्षि दयानन्द को इस प्रकार का राज्याश्रय प्राप्त नहीं था। इतना ही नहीं अपितु अनेक राजा तो महर्षि दयानन्द के कार्य में विघ्न उपस्थित करते थे तथा उनके प्राण लेने पर भी उतारू रहते थे। राव राजा तेज सिंह ने स्वामी जी पर अपनी तलवार से वार किया ही था जिसे स्वामी जी ने निष्फल कर दिया था।

काशी शास्त्रार्थ में काशी राज स्वयं शास्त्रार्थ के मध्यस्थ थे तथा उन्होंने ही पक्षपात से काशी के पण्डितों को विजयी घोषित किया क्योंकि राजा स्वयं ही मूर्तिपूजक थे। इस प्रकार, दयानन्द अपने प्रचार में राज्याश्रय तो क्या जनता के समर्थन से भी प्राय: अछूते ही रहे। पुनरपि उस वीर योद्धा ने सभी मोर्चों पर अपना संग्राम जारी रखा। उस निर्भीक योद्धा ने हुंकार भरी अंग्रेजी शासन के विरुद्ध कि स्वदेशी राज्य ही सर्वोपरि है। अत: अंग्रेज जल्दी से जल्दी भारत को छोड़ दें। इतना ही नहीं अपितु उसने तो भारत के चक्रवर्ती साम्राज्य की भी कल्पना की।

दयानन्द ने कहा वेदज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में परमेश्वर की ओर से ऋषियों का दिया गया ज्ञान है। अत: स्वत: प्रमाण, पूर्णत: विज्ञान सम्मत है। इस प्रकार उस निर्भीक योद्धा ने इन सभी मोर्चों पर अंगद के समान ऐसा पैर जमाया कि जिसे हटाने का साहस किसी ने नहीं किया।

– बी-266, सरस्वती विहार, दिल्ली-34

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

# विजयदशमी (दशहरा) पर्व के अवसर पर स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली रोहतक में गायत्री महायज्ञ एवं विजय दिवस के रूप में हुआ भव्य कार्यक्रम का आयोजन

## 25 साधिका महिलाओं ने गायत्री जप के द्वारा नवरात्रों को वैदिक स्वरूप प्रदान किया

## स्वामी आर्यवेश जी के उद्‌बोधन से सभी ने साधना का लिया संकल्प

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में 5 अक्टूबर, 2022 को विजयदशमी (दशहरा) पर्व गायत्री महायज्ञ के रूप में धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम में सैकड़ों महिला, पुरुष एवं युवाओं ने श्रद्धा के साथ भाग लिया। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन स्वामी आदित्यवेश जी ने किया तथा व्यवस्था का दायित्व बहन प्रवेश आर्या ने संभाला। यज्ञ के ब्रह्मा पद को बहन पूनम आर्या ने सुशोभित किया। गायत्री महायज्ञ में 1100 गायत्री मंत्रों की आहुतियाँ प्रदान की गई। यज्ञ में कुमारी पूनम आर्या टिटौली, श्रीमती शकुन्तला आर्या एवं श्री अनिल (पाणिनी आर्य), श्रीमती सुमित्रा एवं श्री ईश्वर सिंह आर्य, श्रीमती कविता आर्या, श्रीमती विमला एवं श्री जिले सिंह आर्य आदि यजमान बनें और विशेष आहुतियाँ प्रदान कीं।

इस अवसर पर ग्राम–टिटौली में कार्यरत साधिका मण्डल की लगभग 18 सदस्यों ने नवरात्रों के दौरान 2500 गायत्री मंत्रों का प्रतिदिन जाप करके नवरात्र मनाने की एक वैदिक रीति का अनुपालन किया और उन्होंने इन दिनों में एक समय का भोजन छोड़कर विशेष साधना की। उन्होंने कोई मूर्ति पूजा या प्रचलित पौराणिक पद्धति का अनुशरण न करके गायत्री महामंत्र का विशेष जाप कई–कई घण्टे किया और नई प्रेरणा का उदाहरण प्रस्तुत किया। गायत्री महायज्ञ में गायत्री महामंत्र का जाप करने वाली सभी साधिकाओं को आहुतियाँ प्रदान करने का विशेष अवसर प्रदान किया गया। यज्ञ के उपरान्त युवा संन्यासी स्वामी मुक्तिवेश जी के भजनों का सुन्दर कार्यक्रम रहा।

उसके बाद स्वामी आर्यवेश जी का उद्‌बोधन उपस्थित आर्यजनों एवं भारी संख्या में सम्मिलित महिलाओं के लिए विशेष रूप से प्रेरणादायक रहा। स्वामी जी ने पर्वों के वैदिक स्वरूप एवं व्रत की महिमा पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज का दिन बुराई पर अच्छाई की विजय का दिन है। इतिहास के अनुसार रावण बुराईयों के प्रतीक के रूप में जाने जाते हैं। रावण ने अहंकार एवं अत्याचार के द्वारा इतिहास में अपना नाम काले अक्षरों में लिखवाया और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने विनम्रता, सौम्यता व गम्भीरता आदि गुणों को अपनाकर इतिहास में स्वर्णअक्षरों में अपना नाम अंकित करवाया। आज भी भारतवर्ष में विशेष रूप से रावण के पुतले बनाकर लोग उनका दहन करते हैं, किन्तु आज इस परम्परा में संशोधन की आवश्यकता है। हमारे भीतर बैठे रावण और समाज में अत्याचार, भ्रष्टाचार, दुराचार आदि करने वाले रावणों को पहचानने की जरूरत है और उनका दहन करने की आवश्यकता है। विजयदशमी का दिन हम सभी के लिए आत्मावलोचन का दिन है। यदि हमारे अन्दर काम, क्रोध, मद, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष आदि दोष हैं तो हमें इनका दमन करना चाहिए और समाज के अवांछनीय तत्त्व जो शोषण एवं अत्याचार के बल पर समाज को उनसे लड़ने का संकल्प लेना चाहिए। स्वामी जी ने व्रतों के महत्त्व को बताते हुए कहा कि उपवास का नाम व्रत नहीं होता। उपवास से हमें शारीरिक लाभ तो हो सकता है किन्तु जिस उद्देश्य के लिए हम उपवास रखते हैं उसकी प्राप्ति नहीं हो सकती। व्रत का मतलब होता है किसी विशेष कार्य एवं पवित्र लक्ष्य के लिए प्रतीज्ञा करना, संकल्प करना या प्रतिबद्ध होना। यदि ऐसा नहीं करते तो उपवास के नाम पर किये गये व्रत कभी भी सफल नहीं हो सकते। स्वामी जी ने कहा कि विभिन्न पर्वों पर महिलाएं विशेष रूप से व्रत करती हैं तो वे उन पर्वों पर विशेष संकल्प किया करें ताकि अपनी आत्मा की उन्नति हो सके और मनोवांछित उद्देश्य पूरे हो सकें। देवी–देवताओं के नाम पर किये जाने वाले व्रत ढकोसला है। इस गायत्री महायज्ञ में सैकड़ों लोगों ने योगाभ्यास एवं साधना करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में टिटौली के अतिरिक्त आस–पास के गावों से भी अच्छी संख्या में लोग सम्मिलित हुए थे।

कार्यक्रम के उपरान्त प्रीतिभोज की भी समुचित व्यवस्था की गई थी। जिसके लिए आर्य समाज के युवा विद्वान् डॉ. जयवीर मलिक ने आर्थिक सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम में सर्वश्री डी.एस.पी. अर्जन सिंह जी, श्री विनोद हुड्डा जी, श्री प्रदीप कुमार, प्रिं. मिगलानी जी, महाशय जागेराम आर्य, श्री राजवीर वशिष्ठ, श्री महा सिंह आर्य, श्री जिले सिंह आर्य, श्री कृष्ण प्रजापति, श्री अजयपाल आर्य, श्री रौनक सिंह, श्री ईश्वर सिंह, श्री विरेन्द्र कुण्डू, श्री तकदीर आर्य, श्री सत्यव्रत आर्य आदि भी सम्मिलित हुए। कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहा।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।